‘भारत का लोकतंत्र – मदर ऑफ डेमोक्रेसी’ विषय पर माननीय अध्यक्ष का संबोधन

आज हम सब यहां पर चर्चा और संवाद के लिए बैठे हैं। हम दुनिया में भारत को ‘मदर ऑफ डेमोक्रेसी - जननी’ कहते हैं। इस जननी की यात्रा को जब आप देखेंगे, तो देखेंगे कि इस जननी की यात्रा में लोकतंत्र क्या है? जननी की लोकतंत्र की यात्रा में आप देखेंगे कि पहले गांवों में समिति होती थी, सभा होती थी, सभासद होता था, जन-सुनवाई के केंद्र होते थे, जहां लोग अपनी फरियाद करते थे, अपनी बात कहते थे। राजाओं का मंत्रिमंडल बैठता था। वे सब चर्चा करते थे। चर्चा और संवाद में जो चीजें सर्वसम्मति से निकलती थीं, उन पर निर्णय होते थे। उन निर्णयों के आधार पर काम होता था।

ये हमारी प्रारंभिक परंपराएं रही हैं। गांवों के अंदर भी कोई मुद्दा होता था, कोई झगड़ा होता था या कोई आपसी विवाद होता था। पहले न थाने होते थे, न कचहरियां होती थीं और न ही अदालतें होती थीं। गांवों के कुछ प्रमुख लोग बैठते थे, चर्चा करते थे और निर्णय करते थे। गांव वाले उनके निर्णयों को मानते थे। वे कहते थे कि ये पंच हैं, भगवन हैं, जो प्रभु ने फैसला किया है, उसको मानो। बड़े-बड़े फैसलों से हमारा देश चला है। इसलिए, लोकतंत्र हमारे विचारों में है, हमारी अभिव्यक्ति में है और हमारे कार्यों में भी हमेशा लोकतंत्र रहा है।

आजादी के बाद जब लोकतंत्र आया, तो गांवों में ग्राम पंचायतें बनीं, नगरों में नगर पालिकाएं बनीं, राज्यों के लिए विधान सभाएं बनीं और केंद्र के लिए संसद बनी। इन सबके कार्यों का विभाजन किया गया। ग्राम पंचायत ग्राम के विकास के बारे में चर्चा करेगी, सभासद गांवों के लोगों के साथ बैठेंगे और चर्चा करेंगे कि यह-यह काम किए जाएंगे। गांवों में सर्वसम्मति से जिस काम को तय किया जाता था, उसके लिए कहते थे कि पहले यह काम कर लो, यह जरूरी है। इतना ही पैसा, इसलिए दूसरे काम को आगे कर लेना।

अब पंचायतों में कुछ परंपराएं खत्म हो गई हैं। अच्छा सरपंच कौन होता था? अच्छा सरपंच वह होता था, जो पंच को चुनने के लिए पंचों के समूह और गांवों के मौजूदा 20-25 लोगों को बुलाता था। वह कहता था कि मेरे पास दस लाख रुपए हैं, आप बताओ कि क्या-क्या करना है? उन लोगों में से सब कहते थे कि मेरे यहां ये-ये काम होने हैं। लेकिन बातचीत के बाद यह निष्कर्ष निकलता था कि पहले यह काम करा लो, फिर दूसरा काम करा लो और थर्ड काम को उसके बाद करा लो। इस तरह गांवों में कार्यों का ठीक से नियोजन होता था।

अब तो सरपंच साहब ही थैला रख लेते हैं। वे सर्व-सामान्य हैं। वे कहां चर्चा करेंगे? वे चर्चा करें और ढंग से बातचीत करें। कोई एमएलए साहब के पास काम लेकर आएगा, तब ही कोई व्यक्ति दूसरे गांव से भी आ जाएगा। अगर कोई तेज-तर्रार व्यक्ति होगा, तो वह व्यक्ति एमपी साहब के पास पहुंच जाएगा। अगर इधर से कुछ नहीं मिलेगा, तो उधर पहुंच जाएगा। वह व्यक्ति एमपी साहब से कहेगा साहब, कुछ नहीं मिल रहा है, एमएलए साहब कुछ नहीं दे रहे हैं। वह कहेगा एमएलए साहब ने कुछ नहीं दिया। इस कारण उस गांव के विकास के लिए ठीक से प्लानिंग नहीं हो पाई। इसलिए, लोकतंत्र हमारी ताकत है।

इसलिए जब हम सामूहिक रुप से कार्यकर्ताओं के साथ बैठते हैं, उनके साथ चर्चा करते हैं, संवाद करते हैं, बातचीत करते हैं, उनकी कुछ बातें ध्यान में आती हैं, उनकी कुछ समस्याएं ध्यान में आती हैं, जनता क्या सोचती

है, हम जनता के बीच में जाते हैं तो जनता किन-किन विषयों, मुद्दों को उठाती है, क्योंकि जनता आपको वहाँ का नेता मानती है। जैसे कहते हैं कि ये हमारी बात उपयुक्त जगह पर पहुँचा देंगे। हर व्यक्ति पहले भी नहीं आता था और इस 75 वर्ष की यात्रा में अब भी नहीं आता है। अगर आप वर्ष 1952 और वर्ष 2019 के बीच हुए इलेक्शंस का प्रतिशत देखेंगे तो पाएंगे कि लगातार मतदान प्रतिशत बढ़ा है। मतदान प्रतिशत बढ़ने का कारण क्या है? कुछ शिक्षा लोगों के द्वार तक पहुँची तो लोग समझने लगे कि हमारे वोट की क्या कीमत है, कुछ संसाधन उन तक पहुँचे, कुछ लोगों की बातचीत पहुँची तो मतदान का प्रतिशत बढ़ा। आप सब लोग वर्षों तक सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में काम करते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो जनसंघ के समय भी काम कर रहे थे और आज तक काम करते आ रहे हैं, लेकिन वह एक मिशन था। पद प्राप्त करना या कुछ बनेंगे या नहीं बनेंगे, ऐसा कोई विचार नहीं था। विचार कैसा भी हो सकता था। लंबे समय तक कभी राज्यों में सरकार नहीं बनी और दिल्ली में कभी सरकार नहीं बनी। यह तो वर्ष 1975 की इमरजेंसी के बाद वर्ष 1977 में पहली बार कोई विरोध की सरकार आई। उसके पहले तो आती नहीं थी, लोग यह मानकर चलते थे कि कभी आएगी भी नहीं, तो ऐसा नहीं था कि लोगों ने काम करना बंद कर दिया था। उस समय सब लोग जानते थे कि सरकार नहीं आएगी, लेकिन तब भी उन्होंने काम करते-करते बहुत लंबे समय तक अपने जीवन को खपा दिया, अपनी जिंदगियाँ खपा दीं। कोई वार्ड मेंबर नहीं बन पाया, पंच नहीं बन पाया, सरपंच नहीं बन पाया, लेकिन उन्होंने अपनी जिंदगी एक मिशन के लिए दे दी, एक लक्ष्य के लिए दे दी। जब आदमी मिशन और लक्ष्य पर काम करता है तो वह कभी विचलित नहीं होता है। मिशन और लक्ष्य पर काम करने वाला किसी व्यक्ति के लिए भी काम नहीं करता है।

अभी कुछ विसंगतियाँ समाज में आई हैं तो राजनीति में तो ज्यादा विसंगतियाँ आनी चाहिए। पहले न कोई आदमी व्यक्ति के लिए काम करता था, न पद प्राप्त करने के लिए काम करता था और न सरकार बनाने की आकांक्षाओं से काम करता था। उसे लगता था कि सरकार नहीं बनेगी, लेकिन काम करना है। वह न थकता था, न निराश होता था। हर बार चुनाव हारते-हारते निराश होकर वह कभी घर नहीं बैठा। नहीं तो 40 साल तक, 50 साल तक, इतने लंबे समय तक लोग चुनाव हारते रहे तो निराश होकर थकान से कि कुछ होना-हाना नहीं है, यह कभी जाने वाले नहीं है, छोड़ो साथ, लोग थक-थका जाते हैं या किसी को कोई पद नहीं मिलता तो थक-थका जाते हैं। मेरा मानना यह है कि हमारा जो विचार है, वह विचार क्लियर होना चाहिए। अभी तो किसी कार्यकर्ता का एक काम नहीं होता तो कहते हैं कि भाई साहब, एक काम नहीं करवा सकते। अब उसको समझाओ कि क्या तुम इसी के लिए काम कर रहे हो। एक ट्रांसफर नहीं हुआ तो कहता है कि भाई साहब ट्रांसफर नहीं हुआ तो मैं किसलिए काम करूँ। मैंने कहा कि तुम ट्रांसफर के लिए काम कर रहे हो। वह बात वही करेगा कि एक ट्रांसफर नहीं हुआ, तीस साल काम करते-करते हो गया और एक ट्रांसफर नहीं हुआ। तुम तीस साल से काम कर रहे थे, एक ट्रांसफर नहीं हुआ, तो क्या तुम उसके लिए काम कर रहे थे। कभी गाँव के अंदर कोई काम नहीं हुआ तो कहते हैं कि साहब, इस गाँव में कोई काम ही नहीं हो रहा है, तो काहे का काम करें जी। कभी कहीं जाकर देखा नहीं, कहीं जाकर झाँका नहीं, साहब, आपके साथ हैं, आपके साथ हैं, इसने मुझे यह कह दिया, मतलब छोटे-छोटे विषयों पर ऐसा कहते हैं। मैं कई

बार बहुत सालों तक काम करने वाले कार्यकर्ताओं के विचार सुनता हूँ तो मुझे लगता है कि कहीं न कहीं इसका विचार बहुत सीमित तो नहीं हो गया है।

मन को पीड़ा होती है और मैं सोचता हूं कि यह किस दल में काम कर रहा है, क्यों कर रहा है, कैसे कर रहा है, इसका क्या मिशन है क्योंकि इसका कोई विचार ही नहीं है। इसका केवल इतना विचार है कि इतना मिल जाए तो ठीक, वरना यहां काम नहीं करूंगा। मुझे लगता है कि जो वैचारिक रूप से काम करने वाला व्यक्ति है, वह कभी डगमगाता नहीं है क्योंकि वह विचार के लिए काम करता है और सिद्धांतों की बात करता है। राजनीतिक क्षेत्र में जो काम करता है, उसे किसी के चेहरे पर खुशी देख कर ऊर्जा मिलती है। किसी का सहयोग करके, उसकी मुस्कान देखकर, उसकी जिंदगी बेहतर करके उसे खुशी मिलती है। यह उसकी ताकत होती है। उसे लगता है कि मेरे कहने से उसका काम हो गया और उसे अच्छा लगता है कि गरीब का काम हो गया। इससे उसे बार-बार लोगों के काम करने की ताकत मिलती है और प्रेरणा मिलती है। ज्यादातर कार्यकर्ताओं का मन दूसरों के जीवन को बदलने के लिए होता है और वे इस मिशन में ही लगे रहते हैं। दो-चार आम कच्चे खराब हो जाएं तो ऐसा नहीं है कि पूरा आम का पेड़ ही खराब हो गया है इसलिए मेरा मानना है कि दो-चार कार्यकर्ता यदि निकल जाते हैं लेकिन अन्य कार्यकर्ता तो अपने काम में लगे रहते हैं। व्यापकता तो यही है कि दूसरों की जिंदगी की खुशी देखना, उसकी उमंग देखना, दूसरों का काम करना, दूसरों की जिंदगी को बेहतर करना ही कार्यकर्ता का काम होता है।

यदि कार्यकर्ता काम करता है और उसके कहने से काम नहीं होता है तो वह विचलित हो जाता है कि मेरे कहने से काम नहीं हुआ, लेकिन कुछ समय बाद वह फिर लोगों की भलाई के काम में लग जाता है कि कोई बात नहीं, यदि इस बार काम नहीं हुआ, तो दोबारा कोशिश करूंगा तो काम जरूर होगा। मेरा मानना है कि हम राजनीति को अलग रखें। हमें गांव में उसी तरह का सामाजिक कार्यकर्ता बनने की आवश्यकता है जो लोगों के काम कर सके। समाज का नेतृत्व करने वाले नेता बनने की आवश्यकता है। वहां के वंचित, गरीब, दुखी, पीड़ित लोगों का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति को बनना है। हम किस तरह से उसकी जिंदगी को बेहतर कर सकते हैं, उसका नेता बनने की आवश्यकता है। इसी मिशन पर हमें काम करने की आवश्यकता है कि एक-एक गांव के अंदर हमारा कार्यकर्ता पूरी तरह से सारी जानकारी के साथ और यदि गांव में कोई भी दुख आता है, कोई भी विपदा आती है तो गांव का व्यक्ति कहे कि उनके पास चले जाओ, वे सभी काम करवा देंगे। यदि किसी की दुर्घटना हो जाए, बीमारी हो जाए, कचहरी का काम हो या थाना का काम हो, यात्रा का काम हो, यानी कोई भी काम हो तो उसके काम के लिए केवल उसे आपका चेहरा ही दिखाई दे, वह आपके पास ही आए, यह ताकत हमारे कार्यकर्ता में पैदा होनी चाहिए। यह विश्वास और भरोसा अपने कार्यकर्ताओं में पैदा करना है। यदि आपका विश्वास उस गांव में पैदा हो गया, तो आपको चुनाव लड़ने की आवश्यकता नहीं है, आपके चेहरे को देखकर ही लोग वोट दे देंगे। मैं वर्ष 2003 से चुनाव लड़ रहा हूं। वर्ष 2003 से 2019 का चुनाव हो गया है। ऐसा नहीं है कि तीन बार एमएलए और एमपी बनने के बाद जब मैं अपने क्षेत्र में जाता हूं तो जो लोग मुझे वोट देते हैं, वे मेरे चेहरे को सामने रखकर वोट नहीं देते हैं।

इसका मतलब कि मेरे तीन बार एम.एल.ए. और एम.पी. रहने के बाद भी वह मुझे देखकर वोट नहीं दे रहा, वह किसे देख कर वोट दे रहा है? वह उस मोहल्ले मे काम करने वाले महेश को देखकर वोट दे रहा, क्योंकि महेश

ही उसके सुख-दुख में काम आएगा। वह तो महेश को जानता है, इसलिए उसकी ताकत महेश है और महेश ही हमारी ताकत है। अगर महेश की ताकत कमजोर हो जाएगी, तो हमारी ताकत कम हो जाएगी, इसलिए महेश पूरी ऊर्जा से काम करता रहे, मिशन से काम करता रहे, उल्लास से काम करता रहे और यही हमारे संगठन की सबसे बड़ी ताकत होनी चाहिए। उसके गांव में हर छोटे से छोटे काम में भी उसे वह कार्यकर्ता नजर आए, जो इस क्षेत्र में काम कर रहा है। मेरा दावा है कि अगर वह कभी भी चुनाव लड़े और उसके सामने कितना भी कोई बड़ा नेता चुनाव लड़ लेगा, तो भी वह लड़ नहीं पाएगा क्योंकि लोगों का विश्वास और भरोसा उस पर है। आपको जो कागज दिया गया, आपने कहा कि ठीक है। आपके पास कोई आया और कहे कि मेरी तबीयत खराब है, इलाज़ कराना है, और आप कहें कि यहां क्यों आए हो, हॉस्पिटल चले जाओ। जो कार्यकर्ता विषय को टाल देगा या कुर्ता-पायजामा पहन कर निकल जाएगा और बगल के गांव को भी नहीं जानेगा, तो वह कभी कोई बड़ा नेता नहीं बन पाएगा। कभी-कभी किसी परिस्थिति में बड़ा बन जाएगा, लेकिन अगर जमीन नहीं होगी, तो एक दिन खिसक भी जाएगा। यह कहा जाता है कि ये बड़े नेता जो एम.एल.ए. और एम.पी. के उम्मीदवार रहे हैं, ये सरपंच के चुनाव में हार गए। वे क्यों हार गए, तो इसका कारण है कि कार्यकर्ताओं ने काम नहीं किए।

एक बात बताइए कि कार्यकर्ता किसी के लिए काम क्यों नहीं करते हैं क्योंकि आप उनका विश्वास खो देते हैं। जनता आपको वोट क्यों नहीं देगी क्योंकि जनता को यह लगेगा कि यह आदमी विश्वास प्राप्त नहीं करेगा। कोई बड़ा नेता अगर पंचायत और वार्ड का चुनाव हार जाए और फिर भी वह अगर आत्म-विश्लेषण न करे और अपना दोष दूसरों को देगा तो वह नेतागिरी में और भी पीछे जाएगा, कभी आगे नहीं बढ़ सकता। जब भी कोई एम.एल.ए. का चुनाव आता है तो वह कभी नहीं यह कहता है कि मैं अलोकप्रिय हो गया, मैंने लापरवाही बरती या मैंने काम नहीं किया, मैं इलाके में नहीं गया। बस एक लाइन की बात है कि कार्यकर्ताओं ने काम नहीं किया, इसलिए हार गए। आज तक जितने चुनाव हुए हैं, उसमें मैंने यही देखा है। कल भी एक नेता से मिला। मैंने उनसे कहा कि वार्ड के चुनाव में आप हार गए तो उन्होंने कहा कि भाई साहब, मैं नहीं हारा, मुझे कार्यकर्ताओं ने हरा दिया। अब उसे मैं क्या समझाऊं? एक बड़ा नेता था, जो एम.एल.ए. का टिकट मांग रहा है, जब उससे कहा गया कि आप तो जिला परिषद के चुनाव में हार गए तो फिर एम.एल.ए. का टिकट क्यों मांग रहे हैं तो उन्होंने कहा कि भाई साहब, वह तो हमें कार्यकर्ताओं ने हरा दिया। कार्यकर्ता कभी भी किसी को हराता, जीताता नहीं है। आपको जब नेता की आंखों में अन्तर दिखेगा तो उस दिन कार्यकर्ता भी वह अन्तर देखने लग जाएगा। एक नेता को कभी भी अपनी आंखों में अन्तर नहीं दिखाना चाहिए। बड़ा नेता वही है, जिसके लिए सब अपने हैं, उसमें कोई अन्तर नहीं है। उसे कोई लाभ नहीं है। न तो राजनीति में लम्बे समय तक लाभ मिलता है, न आपको कोई लाभ मिलेगा, बल्कि सब अपने हैं, कोई कम करता है, कोई ज्यादा करता है। कोई आपके बारे में अच्छा बोलता है, कोई बुरा बोलता है, सबके अपने-अपने विचार हैं। अगर कोई भी कार्यक्रम होगा तो किसी कार्यक्रम के बारे में कोई लोग अपने विचार रखेंगे, अच्छा काम सबके विचारों को सुनना है। लोकतंत्र में कोई पक्ष में होता है तो कोई विपक्ष में होता है। अगर विपक्ष वाला तर्क ठीक दे रहा है तो जनता उसे स्वीकार कर लेती है और अगर विपक्ष वाला कुतर्क करता है तो जनता भी उसे नहीं मानती है। उसकी ताकत वहीं खत्म हो जाती है।

इसलिए मेरा मानना है कि दो चीज़ें आप ध्यान में रखो। गांव तक यह जो ईगो की बीमारी चल गई है न इसको बंद कर दो, इससे कोई फायदा मिलने वाला नहीं है। न तो आपको मिलना है और न नेता को इससे कुछ मिलना है। अगर लंबी दूरी का नेता बनना है, लंबी दूरी का अच्छा कार्यकर्ता बनना है तो जो जाए उसका काम करना। आपकी आपस में लड़ाई हो सकती है। मैं तो गांव के लिए सेवा कर रहा हूँ। जो मुझसे हो सकता है, मैं काम करता हूँ। मैं किसी भी व्यक्ति के लिए काम नहीं करता हूँ। मेरा मिशन यह है कि मेरे गांव में लोगों के चेहरे पर मुस्कान आए, इसके लिए काम करता हूँ। यह मिशन हमारे मन में होना चाहिए। इसके लिए कार्यकर्ता को पूरा तैयार होना चाहिए। कोई बीमार आ जाए। मान लो कोई बीमार मेरे पास आया और पता चला कि इसके इलाज का खर्चा एक लाख 20 हज़ार रुपये है। अगर वह पैसा हम उसको नहीं देंगे तो वह इलाज नहीं करा पाएगा। हमारे गांव में सभी लोग स्वस्थ रहें, यह सोचना चाहिए। कोई ऐसा गरीब व्यक्ति, बीमार है, इलाज कराना चाहता है, लेकिन धन नहीं है तो वह आपके पास आया है। आप हमारे पास ले कर आओ कि भाई साहब इसकी स्थिति तो वास्तव में ठीक नहीं है, यह तो इलाज भी नहीं करा पाएगा, इसके पास इतने पैसे नहीं है, तो उसकी कुछ व्यवस्था करेंगे, लेकिन किसी व्यक्ति के पास धन नहीं है, इसलिए उसका इलाज नहीं होगा, यह अपने जीवन में कभी नहीं होगा, यह मान कर आप चलो। आपको उस गांव के अंदर हर व्यक्ति की चिंता करनी है। कोई सक्षम है, उसको मत लाओ। ऐसा नहीं हो कि कोई सक्षम है, वह भी आपके पास आ गया और आप कहें कि चलो। नहीं ऐसा नहीं करना है। आप उसके हालात को देखो। हालात को देखने के बाद कि इसके पास तो कुछ भी नहीं है, उसका इलाज करवाओ। किसी व्यक्ति का इलाज कोटा होना, कोटा कराएंगे। किसी का जयपुर होगा तो जयपुर में कराएंगे। दिल्ली में होना है, तो दिल्ली में कराएंगे। उसका इलाज सब जगह कराएंगे। गांव में लगना चाहिए कि कोई तकलीफ हो तो मेरे पास आ गया। कोई दुर्घटना हो जाए तो तुरंत सबसे पहले आपको सूचना करे। आप एमएलए साहब को टेलिफोन करो। हमारे ऑफिस में टेलीफोन करो। हम जो भी सिस्टम में कहीं गड़बड़ होगी तो और ठीक करेंगे, लेकिन तुरंत उसका जो इलाज हो सकता है, वह कराएं। मतलब वहां एक्सिडेंट हुआ, कोटा तक पहुंचाएं, जब तक उसको कोई न कोई मिल जाए, उसका इलाज करा दे, व्यवस्था कर दे। वह क्या कहेगा कि मैंने टेलिफोन किया तो उसने तुरंत मेरा इलाज कोटा करवा दिया, जयपुर करवा दिया और दिल्ली तक भी मेरा इलाज करवा दिया। यह सामाजिक काम हमें करना पड़ेगा। किसी को आंखों का ऑपरेशन करवाना है। कोई विकलांग है, उसको विकलांग की गाड़ी दिलानी है। किसी की बत्तीसी नहीं है, उसको बत्तीसी दिलानी है। किसी की कमर टेढ़ी है, उसको बेल्ट दिलानी है। कोई सुन नहीं सकता है, उसको कान की मशीन दिलानी है। यह कितनी बार हमने आपको कहा है। जब आप गांव में घूमों तो आपको गांव के अंदर यह पता होना चाहिए कि मेरे गांव में ये-ये ऐसे लोग हैं, जिनकी हमें चिंता करनी चाहिए। नाम और फोन नंबर लिख कर एक सूची बनी होनी चाहिए। हम मांगे, आपके पास तुरंत आ जाए। कोई गरीब व्यक्ति है, पढ़ाई करना चाहता है, लेकिन वाकई में धन का अभाव है तो भाई साहब 25 पर्सेंट कर दो, 40 पर्सेंट कर दो, 50 पर्सेंट कर दो, कुछ और ज्यादा कर दो। कोटा पढ़ना चाहता है, जयपुर पढ़ना चाहता है, दिल्ली पढ़ना चाहता है, कोई भी तकलीफ किसी भी तरह की तकलीफ हो, हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि हम उस तकलीफ को दूर करने के लिए पूरे मनोयोग से काम

करें। हम काम ही किसलिए कर रहे हैं जी? अगर हम यह काम नहीं कर रहे हैं तो किसी को जिताने, हराने या किसी को एमएलए, एमपी बनाने तक काम कर रहे हों, तो मत करो, जिंदगी मत खराब करो।

आपका मिशन उस गांव के अंदर हर व्यक्ति के जीवन को बदलना, उसकी सेवा करने का मिशन होना चाहिए। हमारे राजनीतिक कार्यकर्ताओं का आजकल क्या नेचर हो गया है कि यहां मीटिंग में आ गए, उस धरने में चले गए, प्रदर्शन में चले गए, बाकी राम-राम। गांव के अंदर अपना दस, अभी 20 की कार्यकारिणी बूथ की बनी हुई है। एक गांव में अगर 20 कार्यकर्ता आ जाए तो उस गांव को बदल सकते हैं कि नहीं बदल सकते हैं? बदल सकते हैं न?

मेरा यह कहना है कि गांवों के अंदर 10-20 आदमी बैठकर चर्चा करें। आप में से कोई भी किसी गांव के एक नेता के बारे में बता दीजिए, जिसने तीन सालों के अंदर अपने सारे कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर चाय पी हो? चलिए, हम सब मिल कर किसी गांव में घूमते हैं और देखते हैं कि क्या ऐसा कोई व्यक्ति किसी गांव में है? हम 15 लोग किसी गांव के अंदर सामूहिकता के साथ बैठकर चाय पीते हैं और देखते हैं कि हमारे गांव में किस प्रकार की प्रॉब्लम है। हम सभी गांव में घूम कर लोगों से मिलते हैं और देखते हैं कि लोगों की क्या तकलीफ है, उनकी समस्या क्या है? इसे देखने के लिए हम एक बार निकलते हैं। एक महीने के अंदर एक दिन भी अगर पांच-छह कार्यकर्ता गांव के अंदर निकल जाएं, तो आप एक बार बताइए कि जब आप पांच साल बाद चुनाव लड़ने जाए या छह महीने बाद विधान सभा चुनाव लड़ने जाए तो वह आपको वोट देगा या नहीं देगा? वह कहेगा कि हर महीने या दो महीने में यह हमारे घर पर संभालने आते हैं, हाल-चाल पूछने आते हैं, चाहे काम हो या न हो, आते रहते हैं। यदि इसमें कोई दिक्कत है तो आप बताइए। इसमें प्रॉब्लम क्या है? यह आप बताइए। क्या यह कोई असंभव काम है?

क्या ऐसा कोई व्यक्ति है, जो यह बता दे कि उसने ऐसा मिशन किया हो और वह गांव में लोगों के साथ बैठकर चाय पी हो? यह अपनी संगठन की हालत है। अब मैं क्या बात करूँ, आप बताइए? कार्यकर्ताओं से मिलकर काम कराने की बात है।